गांधी-मार्ग

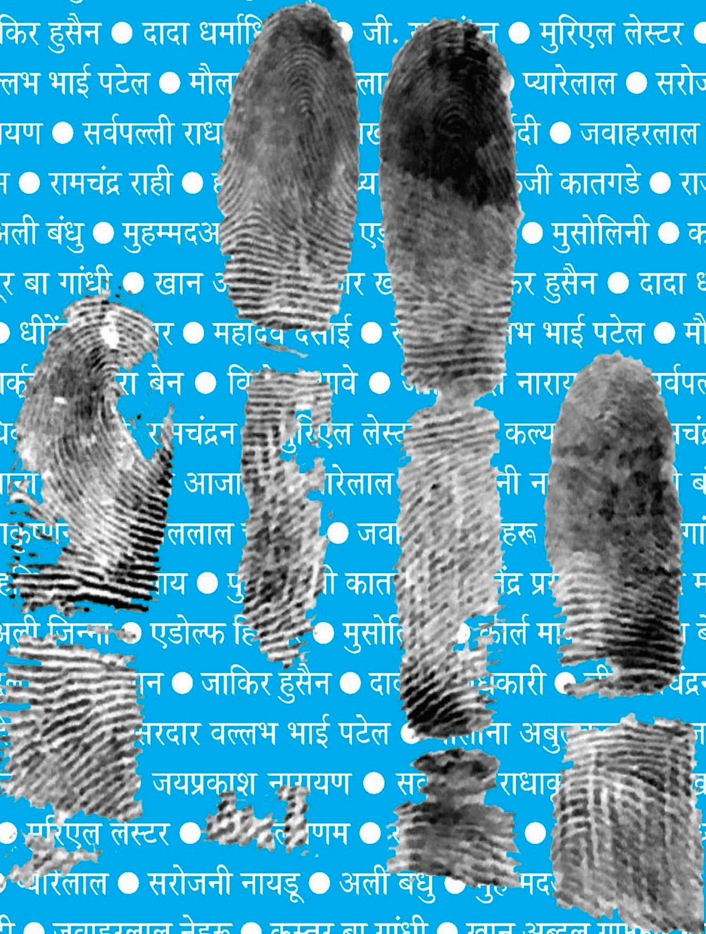

गांधी : 150

सितंबर-अक्तूबर 2018

खोजें गांधी अपने भीतर...

जब बाहर बहुत
अंधेरा हो
बहुत अफरा-तफरी
शोर-शराबा
घनेरा हो
तब
भीतर उतरना/अंदर झांकना
जरूरी होता है
इसलिए अंधेरे से लड़ते हुए और उजाले की
तरफ जाते हुए
इन दो कदमों को
अपने भीतर
अवस्थित करें...

गांधीः 150 के राष्ट्रीय आयोजन में अपनी भूमिका तय करें!

- गांधी स्मारक निधि
- राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय
- कस्तूरबा गांधी स्मारक ट्रस्ट
- राष्ट्रीय युवा संगठन
- गांधी शांति प्रतिष्ठान

गांधी शांति प्रतिष्ठान, 221/223, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002
फोनः 011-23237491, इमेलः gandhi.150.2018@gmail.com
F B : gandhi:150

गांधी-मार्ग

अहिंसा-संस्कृति का द्वैमासिक

वर्ष 60, अंक 5, सितंबर-अक्तूबर 2018

गांधी शांति प्रतिष्ठान

1. मैं... अपनी नजर में	गांधीजी	7
2. हम इंसान बनेंगे तो गांधीजी करीब मिलेंगे	सर्वपल्ली राधाकृष्णन	17
3. मेरी यादों में गांधीजी	संकलन	23
4. गांधी का रास्ता ही हमारा रास्ता है	जयप्रकाश नारायण	35
5. **दो पत्रः** सदैव ही आपका मित्र!	गांधीजी	41
6. दक्षिण अफ्रीकाः सत्याग्रह का प्रवेश-द्वार	गांधीजी	45
7. यहां गांधी का काम हुआ था...	रामचंद्र राही	51
8. मेरा धर्म	गांधीजी	55
9. गांधी की चाक पर	पुंडलीकजी कातगडे	58
10. गांधी की मेजबानी-3 ...और वे सीढ़ियों से ऊपर पहुंचे!	मुरिएल लेस्टर	77
11. अंतिम जन्मदिन	गांधीजी	89
12. आखिरी दिन	वी. कल्याणम्	93
13. **दस्तावेजः** छठी सफलता से पहले		98
14. ...जिसे हमने खो दिया!	माखनलाल चतुर्वेदी	101
15. जन-जन का बोधिवृक्ष	जी. रामचंद्रन	106
16. सच्चा स्मारक	विनोबा	109
17. **टिप्पणियां**		115
18. **पत्र**		118

आवरणः वक्त के माथे पर टीका!: महात्मा गांधी के दोनों हाथ की उंगलियों की छाप।
राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय के सौजन्य से

वार्षिक शुल्क : भारत में 200 रुपये, दो वर्ष के 350 रुपये, आजीवन-1000 रुपये (व्यक्तिगत), 2000 रुपये (संस्थागत), इस अंक का मूल्य 50 रुपये, डाक खर्च निःशुल्क। दो माह तक न मिलने पर शिकायत लिखें। शुल्क चेक, बैंक ड्राफ्ट, मनीऑर्डर द्वारा 'गांधी पीस फाउंडेशन' के नाम भेजें।

संपादन : कुमार प्रशांत **प्रबंध :** मनोज कुमार झा **प्रसार :** भगवान सिंह

गांधी शांति प्रतिष्ठान, 223 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 के लिए अशोक कुमार द्वारा प्रकाशित
फोन : 011-2323 7491, 2323 7493, फैक्स : 011-2323 6734
Email: gmhindi@gmail.com

मुद्रक : नीता प्रेस, 3574- गली जटवारा, नीयर सबलोक क्लीनिक, दरियागंज, दिल्ली-110002, फोन नं. 8800646548

शुरू में...

पूरा हिसाब लगाएं तो हिंदुत्व की गोली खा कर गिरते वक्त बापू की उम्र थी 78 साल 3 माह 28 दिन! तारीख थी 30 जनवरी 1948; समय था संध्या 5.17 मिनट। स्थान था नई दिल्ली का बिड़ला भवन। हिंदुत्ववादी संगठनों की तरफ से गांधीजी की हत्या करने की 5 असफल कोशिशों के बाद, जिनमें से अधिकांश में नाथूराम गोडसे को शामिल किया गया था, यह छठवां प्रयास था जिसके लिए 9 गोलियां खरीदी गई थीं और खरीदी गई थी एक बेरेट्टा एम 1934 सेमी ऑटोमेटिक पिस्तौल। इसे लेकर नाथूराम गोडसे महात्मा गांधी की प्रार्थना सभा में आया था। भारतीय समाज पर महात्मा गांधी के बढ़ते प्रभाव को रोकने की हर कोशिश विफल होती जा रही है तो अब एक ही रास्ता बचा है: गांधी की शारीरिक हत्या! उसे यही करना था। गांधी का अपराध क्या था? बस इतना कि हिंदुत्ववादी भारतीय समाज की जिस अवधारणा में मानते हैं, गांधी उससे किसी भी तरह सहमत नहीं हैं। वे हिंदुत्ववादियों से– और उस अर्थ में सभी तरह के धार्मिक-सामाजिक कठमुल्लों से– असहमत ही नहीं हैं बल्कि पूरी सक्रियता से अपनी असहमति जाहिर भी करते हैं और भारतीय समाज की अपनी अवधारणा को जनता के बीच रखते भी हैं। असहमति आजादी और लोकतंत्र का प्राण-तत्व है। असहमति के कारण किसी की जान नहीं ली जाएगी, इसी आस्था पर लोकतंत्र का भवन खड़ा होता है। लेकिन कठमुल्लों के लिए असहमति वह विष है जो उनकी जड़ों पर कुठाराघात करता है। कोई 80 साल के निहत्थे बूढ़े गांधी पर छिप कर गोलियां बरसाते हिंदुत्ववादियों के हाथ नहीं कांपे क्योंकि उनके सपनों के समाज में असहमत की कोई जगह न थी और न है।

30 जनवरी 1948 से कोई चार साल पहले, गुलाम भारत ने गांधीजी के 75वें जन्मदिन का आनंद मनाया था और भारतीय दर्शनविद् सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने एक अभिनंदन ग्रंथ संपादित किया था जिसमें देश-दुनिया की तमाम विभूतियों ने गांधी के प्रति अपनी भावनाएं व्यक्त की थीं। इसके 25 साल बाद, देश-दुनिया में मनाई गई गांधी की शताब्दी! तब देश आजाद हो चुका था, जवाहरलाल, सरदार पटेल, राजेंद्र प्रसाद, मौलाना आजाद सरीखे सभी सिधार चुके थे। सरहदी गांधी खान अब्दुल गफ्फार खान अपनी कांपती-कमजोर काया संभालते, बगल में अपनी गठरी दबाए अपने गुरू का आजाद देश देखने पहली और अंतिम बार

भारत आए थे। सर्वपल्ली राधाकृष्णन तब देश के राष्ट्रपति थे और 'बादशाह खान स्वागत समिति' के अध्यक्ष जयप्रकाश नारायण थे। मुझे याद आया था कि महात्मा गांधी की विदाई भी हमने सांप्रदायिक दंगों से की थी और सरहदी गांधी का स्वागत भी अहमदाबाद में फूटे सांप्रदायिक दंगों से किया था।

यह सारा इतिहास कुछ याद यूं आ रहा है कि हम और दुनिया आज महात्मा गांधी की 150वीं जयंती मना रहे हैं। इतिहास वह आईना है कि जिसमें सभ्यता अपना चेहरा देखती है। मैं उसमें गांधी को देखता हूं और खुद से पूछता हूं कि 150 साल का आदमी कितने काम का होगा? और यहां आलम यह है कि इस 150 साल के आदमी से ही हम सारे कामों की उम्मीद लगाए सालों से बैठे हैं! सारी दुनिया का चक्कर लगा कर हम लौटते हैं और कहते हैं कि हमें लौटना तो गांधी की तरफ ही होगा। ऐसा कहने वालों में सभी शामिल हैं– नोबल पुरस्कार प्राप्त वे दर्जन भर से ज्यादा वैज्ञानिक भी जिन्होंने संयुक्त वक्तव्य जारी किया है कि अगर मानवता को बचना है तो उसे गांधी का रास्ता ही पकड़ना होगा; मार्टिन लूथर किंग, नेल्सन मंडेला और ओबामा जैसे लोग भी जो कहते हैं कि न्याय की लड़ाई में वंचितों-शोषितों के पास लड़ने का एकमात्र प्रभावी नैतिक हथियार गांधी का सत्याग्रह ही है; भौतिकविद् हॉकिंग्स जैसे भी हैं जो जाते-जाते कह गये कि विकास की जिस दिशा में दुनिया ले जाई जा रही है उसमें मानव जाति का संपूर्ण विनाश हो जाएगा और तब कोई नया ही प्राणी, नये ही किसी ग्रह पर जीवन का रूप गढ़ेगा; चे ग्वेवेरा जैसे गुरिल्ला युद्ध-सैनिक भी हैं जो राजघाट की बापू समाधि पर सर झुकाते वक्त यह कबूल करते हैं कि वहां क्यूबा में उनकी पीढ़ी को पता ही नहीं था कि लड़ाई का यह भी एक रास्ता है; 'त्रिकाल-संध्या' लिखने वाले भवानीप्रसाद मिश्र सरीखे कवि भी हैं जो कविता में, कविता को जितना टटोलते हैं, गांधी ही उनके हाथ आते हैं; और 30 जनवरी मार्ग पर स्थित बिड़ला भवन में गांधी से किसी हद तक अनजान वह कोई लड़की भी है जो यह सुन-समझ कर फूट कर रो पड़ती है कि 80 साल के आदमी को हमने इसलिए मार डाला कि वह हमसे या हम उससे सहमत नहीं थे; बोली वह– "यह तो पाप हुआ!"

यह और ऐसे कितने ही प्रसंग आंखों के सामने घूम रहे हैं जब हम **गांधी:150** की तैयारी में देश में यहां-वहां घूम रहे हैं। इन लोगों या इन प्रसंगों से गांधी की महानता साबित करने का मेरा कोई इरादा नहीं है। महानता व्यक्ति की होती है तो वह व्यक्ति के साथ ही चली जाती है। इतिहास के पन्ने पलटेंगे हम तो उसके हर पन्ने से चिपका एक-न-एक महान व्यक्ति मिलेगा ही। लेकिन वह उस पन्ने के बाहर कहीं नहीं मिलेगा। 30 जनवरी 1948 को जिस नाथूराम गोडसे ने, पर्दे के पीछे छिपे कई नाथूरामों की शह पर गांधी को तीन गोलियों से